सरस्वती/जिनवाणी वन्दना

(आगम एवं अध्यात्मनिष्ठ कविता)

(वैश्विक सत्य–शान्ति की प्रवक्ता सरस्वती माता की वन्दना)

आचार्य कनकनन्दी

(राग - बंगला - उड़िया, बहुरागीय वन्दना)

चांद सी महबूबा....., इक प्यार का नगमा.....।

जननी ! जननी ! जननी ! वन्दे शारदे जननी/ (हे जिनवाणी)
तीर्थंकर सुता पवित्र गात्रा, ज्ञान पयोधरा पावन माता।
गणधर ऋषि मुनि सेविता माता, देव विद्याधर पूजिता माता।
राजा-महाराजा - चक्री वन्दिता, विद्वान कवि नरगण पूजिता।
पशु-पक्षी सुदृष्टि वन्दिता, स्वर्ग - मोक्षदायिनी भारती माता।।(1)

ज्ञान- विज्ञान से अलंकृत गात्रा, शिक्षा संस्कृति से शोभित माता।
भाषा-गणित कला मण्डिता, अध्यात्मिक ज्ञान से पावन माता।।
अनेकान्तमय आपका आत्मा, स्याद्वाद वाणी से आप शोभिता।
प्रमाण नय निक्षेप शोभिता, वस्तु स्वरूप की आप प्रणेता।।(2)

द्रव्य - गुण - पर्याय की आप ज्ञाता, उत्पाद व्यय ध्रौव्य सहिता।
मोक्षपथ की आप (हो) सुज्ञाता, मार्गणा गुणस्थान सहिता।।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र दात्री, भव्य कमल की आप सावित्री।
/भव्य कमल की विकासिनी दात्री।
विश्वहितंकरी हे जगज्जननी !, 'कनकनन्दी' की ज्ञान दायिनी।।(3)

विश्व प्रबोधिनी सरस्वती माता, वैश्विक शान्ति की आप प्रवक्ता।
विश्व समस्या की समाधान कर्त्ता, शत-शत वन्दन हे जगन्माता !(4)

Scanned by TapScanner

महान आध्यत्मिक / वैज्ञानिक गुरुश्रेष्ठ

आचार्य श्री कनकनन्दीजी की प्रगतिशील आरती

चाल-मन डोले मेरा तन डोले ..... सृजन मुनि सुविज्ञसागर

धर्म दर्शन के वैज्ञानिक की....ले मंगल दीप प्रजाल हो ऽऽऽ
मैं आज उतारूँ आरतियाँ.....(ध्रुवपद)...
कनकनन्दी जी नाम है जिनका.....महान उदार भावी ऽऽऽ
जिनके सन्मुख विश्व हुआ है.....नतमस्तक शिरनाईऽऽ
गुरुजी नतमस्तक शिरनाईऽऽ
ऐसे गुरुवर को.....ऐसे ऋषिवर को....नित प्रति वन्दन शतबार हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ.....धर्म- (1)
देश-विदेश में जिनके प्रतिनिधि.....धर्म-विज्ञान प्रसारे ऽऽ
जिनकी प्रज्ञा-समता-ममता..हर जन मंगल गायेऽऽ
गुरुजी हर जन हर्षित भावे ऽऽ
ऐसे मुनिवर की - ऐसे यतिवर की....मैं हर पल करूँ आराधना
मैं आज उतारूँ आरतियाँ।..... धर्म (2)
अध्यातम की ज्योति जलाकर.....निस्पृह भाव प्रकाशेऽऽ
जिनकी सरल मूर्ति लखकर.....हर जीवन शान्ति पायेऽऽ
गुरुजी भव्य जीव शान्ति पायेऽऽ
ऐसे मनीषी की.....ऐसे हितैषी की.....मैं हर क्षण करूँ अर्चना हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ धर्म... (3)
जिनके ज्ञान-विज्ञान-अनुभव से.....लाभान्वित विज्ञानी ऽऽ
'सुविज्ञ' भी हर पल लाभान्वित....मन में हर्ष अपाराऽऽ
गुरूजी जन में हर्ष अपारऽऽ
ऐसे सद्ज्ञानी.....ऐसे विज्ञानी.....गुरुवर की आरती आज हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ.....धर्म.....(4)

ओ.श्री के दीक्षा दिवस 5 फरवरी के उपलक्ष्य में

"गुरू वन्दन/स्तवन"
(आचार्य कनकनन्दी जी के गुणों का वर्णन)

(राग-मीठो-मीठो बोल....) -क्षुल्लिका सुवीक्षमती

गुण गाओ सब गुण गाओ.....कनकनन्दी जी के गुण गाओ।
दृढ़ संकल्पी करूणानिधान.....प्रबल प्रखर व्यक्तित्ववान।। ध्रु.।।
युवावय में दीक्षा है धारी.....भोग विषय से सर्वथा विरागी।
सत्य-तथ्य में जिज्ञासु भारी.....स्वयं को पाने की मन में है ठानी।।
समय शक्ति व बुद्धि का अपव्यय.....तुम्हें न एक पल भी भाता है;
श्रद्धा सहित.....भक्ति सहित.....मैं वन्दन करू तव पद युगल।
गुरुवर मेटो मिथ्या भरम.....गुण गाओ..... ।।(1)
अपने पराये का भेद न धरे..... निष्पक्ष भाव से सत्य ही वरे।
सर्वजीव सुख शांति को पाये..... अन्त्योदय की भावना भी भाये।।
दुर्गुणों से दूर ही रहते ..... प्रलोभनों से मोहित न होते।
विघ्न बाधाओं में अविचल रहते.....आत्मबल युत आगे ही बढ़ते।।
कीर्तन करूँ.....स्तुति करूँ..... मैं वन्दन करूँ..... ।।(2)
स्व-मूल्यांकन स्वयं ही करते.....अन्य की उपेक्षा प्रतीक्षा न करते।
न्यायशील अनुशासन प्रिय गुरुवर.....भाव विशुद्धि को केन्द्र में रखते।।
भौतिकता की चकाचौंध परे.....संकीर्ण-स्वार्थ अनुदारता से परे।
स्वहित सह पर हित में भी रत.....अमिट गुणों की वांछा ही करें।।
पूजन करूँ.....अर्चन करूँ.....मैं वन्दन करूँ..... ।।(3)
प्रोत्साहन की जादूई क्षमता से.....अयोग्य में योग्यता जगाते हैं।
शरणागत वत्सल गुण युत सूरीवर.....भटके हुये को राह सुझाते हैं।।
कलीकाल में भी समता का है साथ.....मानव रूप में महामानव है आप।
आपकी निश्चल छवि को लखकर ही....मिट जाता है सकल दुःख संताप।।
आदर सहित.....सम्मान सह.....मैं वन्दन करूँ ..... ।।(4)
अनुभव ज्ञान में आपका न सानी.....चिंतन युत स्व-आत्मा के ध्यानी।
अद्भुत वैचारिक क्षमता धारी ..... गूढ़ रहस्यों के भी विज्ञानी।।
निस्पृह मौनी अयाचक वृत्ति.....सहज सरल आचार में प्रवृत्ति।।
परम आदर्श तुम ही हो मेरे.....तव सम उत्कृष्ट भावना हो मेरी।।
आनन्द से ..... शुभ भाव से ..... मैं वन्दन करूँ..... ।।(5)

Scanned by TapScanner

मेरी (आ. कनकनन्दी की) भावना एवं साधना

(राग-1 सायोनारा.....2. तुम दिल की धड़कन.....)

आचार्य कनकनन्दी

मेरी भावना मैं सतत भाता हूँ, भावना मेरी सदा पावन हो।
उदार सहिष्णु साम्य युक्त/(सह) हो, स्व-पर हितकारी मंगल हो।।
सनम्र सत्यग्राही सदा मैं बनूँ, राग-द्वेष मोह परे भी हो।
ईर्ष्या तृष्णा मद काम से रहित, सरल सहज सुशान्त हो।।

गुणग्राही मैं सदा ही बनूँ, दुर्गुणी से शिक्षा सदा लहूँ।
प्रतिस्पर्ध्दा बिना विकास करूँ, आकर्षण - विकर्षण परे रहूँ।।
ख्याति पूजा लाभ से विरहित, अपना-पराया भेद से रिक्त।
स्व-पर-विश्वहित चिन्तन करूँ, लेखन वचन क्रिया सहित।।

अन्य से अविचल रहूँ मैं सदा, ज्ञाता द्रष्टा कर्त्ता मेरा रहूँ।
द्रव्य क्षेत्र काल सुयोग्य सहित, आहार विहार निवास करूँ।।
उपलब्धियों का सदुपयोग करूँ, विशेष उसे विकास करूँ।
दुरुपयोग कभी मैं न करूँ, अहंकार दीनता से दूर रहूँ।।

धीर वीर गम्भीर सदा रहुँ, चिन्तन समीक्षा सदा करूँ।।
आत्म विशुद्धि में रत रहूँ सदा, स्वयं प्रामाणिक सदा रहूँ।।
आत्मोपलब्धि ही मेरा परम लक्ष्य, तदनुकूल ही मैं रत रहूँ।
उत्सर्ग /(निश्चय)अपवाद साधना सहित, लक्ष्य प्राप्ति हेतु आगे बढ़ूँ।।

प्रकाशक -
1 धर्म - दर्शन - विज्ञान शोध संस्थान, बड़ौत (उ.प्र.)
2. धर्म - दर्शन सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.)
शाखाएँ - 1. मुजफ्फरनगर 2. गाजियाबाद 3. सलूम्बर 4. कोटा, 5. सागवाड़ा 6. मुम्बई 7. अमेरिका

सौजन्य :-
श्री सनत कुमार पहाड़िया, उदयपुर (राज.) मो. 98295-82041

Scanned by TapScanner